भारतीय समाज सुधार आन्दोलन में रामकृष्ण परमहंस की भूमिका का ऐतिहासिक अध्ययन

प्रियंका कुमारी
शेधार्थी, इतिहास विभाग,
ल॰ ना॰ मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा,

सारांश :

आधुनिक भारत के इतिहास में 19वीं शताब्दी का महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इस शताब्दी में यहाँ धर्म सुधार एवं समाज सुधार आन्दोलन हुआ था। इस आन्दोलन में भारतीय समाज सुधारकों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। यथा :– राजा राम मोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस आदि का विशेष योगदान है। समाज सुधार आन्दोलन में साम्राज्यवादी कम्पनी सरकार ने भी वर्ष 1857 ई0 तक बढ़–चढ़ कर भाग लिया एवं इससे संबंधित कानून बनाकर सुधार को ठोस स्वरूप प्रदान किया। परंतु इसके बाद महान् विद्रोह हुआ एवं सरकार ने यह अनुभव किया कि अगर हम भारतीय समाज सुधार में भाग लेते है तो सरकार को स्वदेश वापस जाना होगा। भारतीय समाज सुधार एवं घर सुधार आन्दोलन में जो तत्कालीन समाज एवं धर्म पर अंधविश्वास एवं अज्ञानता में जो तत्कालीन समाज एवं धर्म पर अंधविश्वास एवं अज्ञानता का जो परत जम चुका था उसका विरोध किया गया। प्रस्तुत निबंध में रामकृष्ण परमहंस के संक्षिप्त जीवन वृत्ति का उल्लेख करते हुए उनके द्वारा किए गए आध्यात्मिक, धार्मिक एवं सुधारात्मक कार्यों का उल्लेख किया जाएगा, साथ ही उनके सार्वजनिक जीवन से भारतीय जनमानस पर क्या प्रभाव पड़ा का भी अध्ययन किया जाएगा और अन्ततः सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में योगदान का विशलेषण किया जाएगा।

मूल शब्द : आन्दोलन, भक्ति, पूर्ण संतुष्टि, परमहंस, संकीर्ण, अंधविश्वास

प्रस्तावना :

समाज सुधार–धर्म सुधार आन्दोलन ने तत्कालीन भारतीय समाज में घर किए हुए जड़ता को पूर्णतः झकझोंर दिया। इस आन्दोलन ने भारत के अतीत को उजागर किया जिससे भारतीयों में आत्मसम्मान की भावना जगी जो अन्ततः राष्ट्रवादी आन्दोलन के रूप में आगे बढ़ा। आन्दोलन के नेताओं ने समाज को स्वतंत्रता एवं समानता का भी उपदेष दिया। तत्कालीन परिप्रेक्ष्य में इस स्वतंत्रता का अर्थ मात्र बौद्धिक चिन्तन की स्वतंत्रता नहीं था, बल्कि असमानता, शोशण और अत्याचार से मुक्ति भी था। इस प्रकार समाज सुधार एवं धर्म सुधार आन्दोलन आधुनिक भारत के प्रारंभ भी माना जाता है। आन्दोलन भले ही पष्चिम सभ्यता एवं संस्कृति के संपर्क से प्रारंभ हुआ था और अंततः यह पश्चिमी साम्राज्य एवं संस्कृति के संपर्क से प्रारंभ हुआ था और अंततः यह पश्चिमी साम्राज्य के जड़ पर ही प्रहार कर उसके समाप्ति का मार्ग प्रशस्त किया यह विरासत भी भारत में ब्रिटेन का साम्राज्यवाद, शोशण और उसके विनाश का मार्ग था भारतीय स्वतंत्रता संग्राम।

हिंदू धर्म की यह एक निराली बात रही है कि लगभग नियमित अंतर पर हिंदू जगत के अन्दर, आध्यात्मिक पुनर्जागृति के लिए सहज ही आंदोलन होते रहे हैं। इस तरह के आंदोलन का आधार भारतीय आध्यात्मिकता की सच्ची परंपराएं थीं, और उन पर बाहरी प्रभाव सीधा नहीं पड़ा था। 19वीं शताब्दी के भारत में इस तरह की आध्यात्मिक जागृति के लिए आंतरिक खोज, श्री रामकृष्ण परमहंस ने की। यदि राममोहन राय का ब्रह्म आंदोलन–उन ब्रह्य प्रभावो का परिणाम था जो आधुनिक पश्चिम के ज्ञानबोध और तार्किकता से उपजे थे, तो जिस आंदोलन को रामकृष्ण और उनके अनुयायियों ने चलाया वे उस हिंदू भावना का परिणाम थे जो अपने पुनरुत्थान के लिए आंतरिक रूप से उभरी थी।

रामकृष्ण 1836 ई० में बंगाल के हुगली जिले में पैदा हुए थे। जैसा कि समझा जाता है उनका जीवन कबीर या नानक जैसा ही साधारण था। लेकिन ठीक महान संतों और भविष्य द्रष्टाओं की तरह उनका जीवन भी अनोखे रहस्यमयी अनुभवों से भरा था। उनका संदेश भी महान था। उनका जीवन ऐसा था कि साधारण अर्थों में इसका विवरण देना कठिन है।रामकृष्ण एक ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए थे। इस परिवार में जिस तरह का धार्मिक वातावरण था, उससे बालक रामकृष्ण को हिंदू धर्म के विभिन्न मतों और शास्त्रों का काफी ज्ञान प्राप्त हुआ। बहुत छोटी आयु से ही इस बालक ने धार्मिक रीतियों के प्रति असाधारण उत्साह दिखाया और कभी कभी तो आत्मविभोर होकर वह अपने आप में खो जाता था। रहस्यमय अलौकिक अनुभवों ने उनका जीवन अत्यंत असाधारण बना दिया। वे भक्तिभाव में पूरी तरह विलीन हो गए और उन्होंने आध्यात्मिक खोज में अपना जीवन लगा दिया।

लगभग 20 वर्ष की आयु में रामकृष्ण कलकत्ता के पास दक्षिणेश्वर में काली मंदिर के पुजारी बन गए। मां काली के प्रति उनकी इतनी तीव्र श्रद्धा थी कि उन्हें यह, सर्वोच्च देवी माता पूर्ण शक्ति की प्रतीक लगी और उनका यह विश्वास हो गया कि इसी शक्ति से विश्व उपजा है और इसी के सहारे इसका अस्तित्व है। यह मां काली जनसाधारण वाली देवी नहीं थी जो अंधविश्वासों और रीतियों के संबद्ध थी, बल्कि उनके लिए मां का स्वरूप सर्वशक्तिमयी तथा सर्वव्यापी दैवी शक्ति के रूप में था जिस पर सारा भौतिक और अलौकिक विश्व आधारित था। रामकृष्ण के लिए काली माता और अधिक ज्ञान प्राप्ति का साधन बन गई। उन्होंने तांत्रिक क्रियाएं भी करके देखीं और साथ ही वेदों के अनुसार संयासियों का–सा जीवन भी व्यतीत करके देखा। यौगिक अनुशासन और साधना, विश्वास, भक्ति, शास्त्रों के सत्य तत्त्व और अपने अनुभवों के माध्यम से अंत में रामकृष्ण को सर्वोच्च शक्ति के दर्शन हुए।उनके इन सब अनुभवों से जो ज्ञानबोध हुआ उसे संक्षेप में इस प्रकार बताया जा सकता है :

मानव का सर्वोच्च ध्येय ईश्वर की भक्ति है। यह भक्ति और निष्ठा, अनंत स्नेह के द्वारा व्यक्त की जा सकती है। यहां रामकृष्ण के विचार मध्यकालीन संतों के भक्तिमार्ग जैसे ही थे। स्नेह और प्रेम से प्राप्त ईश्वर, बिल्कुल व्यक्तिगत हो सकता है और उसे किसी भी रूप में देखा जा सकता है। लेकिन फिर भी वह अगोचर, अनाम, अरूप निर्गुण है । इस प्रकार परमात्मा, रूपरहित या रूपसहित हो सकता है। मनुष्य जिस तरह चाहे उसकी प्राप्ति कर सकता है। ब्रह्म के संबंध में इस तरह की धारणा को लेकर रामकृष्ण ने किसी भी धर्म के लिए बहत व्यापक क्षेत्र की कल्पना की। सच्चे धर्म में भगवान के साथ सच्ची ध्यान लगाने की पूरी पूरी स्वतंत्रता है। धर्म तो केवल उस सर्वोच्च लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग मात्र है। रामकृष्ण ने वास्तविक उदारता से उन सभी कट्टर बातों को समाप्त करना चाहा जिन्हें रूढ़िवादी, आंख मूंद कर सत्य मानते थे। रामकृष्ण ने कहा, वे जो यह मानते थे कि भगवान का कोई स्वरूप नहीं है उसको उसी प्रकार प्राप्त कर सकते हैं जिस प्रकार वे लोग जो यह विश्वास रखते हैं कि परमात्मा का कोई रूप है। दोनों के लिए केवल दो ही बातें हैं जिनकी नितांत आवश्यकता है। ये बातें हैं पूर्ण आस्था और आत्मसमर्पण।

रामकृष्ण के विचारों में हिंदू धर्म में संश्लेशण और सम्मिश्रण की शक्ति का सृजन किया। यदि हिंदू धर्म के सत्यतत्व पर ही ध्यान किया जाए तो विभिन्य धार्मिक मतों की रूढ़ियों का कोई अर्थ नहीं रह जाता। मानव जीवन का लक्ष्य उस परम शाश्वत अनंत की प्राप्ति है। वेद, उपनिषद, सूत्र , शास्त्र विभिन्न मत शिव, शक्ति और विष्णु के भक्तों के विभिन्न धार्मिक सिद्धांत, ये सब केवल उस शाश्वत ब्रह्म की अनंत खोजमात्र हैं। रामकृष्ण ने वे सभी दीवारें तोड़ दीं जिनके कारण हिंदू धर्म में विभिन्न छोटे–छोटे मतों के बीच भेदभाव पैदा हो गया था। उन्होंने इन सब को एक साथ परम सत्य की आंतरिक खोज की ओर अग्रसर किया। इस प्रकार उनके अनेक उपदेशों से हिंदू धर्म में नई शक्ति और एकता की भावना आई। यह एक

ऐसी वृत्ति थी जिसे कभी कभी नव हिंदू धर्म भी कहा जाता है। इसके अधीन हिंदू धर्म में सुधार संभव थे और सुधारों की बात पर धर्म को छोड़ना आवश्यक नहीं था । यही था वह अंतर जो प्रायः ब्राह्म समाजियों और रामकृष्ण के अनुयायियों के बीच था। यदि ब्राह्म समाजी हिंदू धर्म को इसलिए छोड़ गए क्योंकि इसमें मूर्ति पूजा होती थी तो रामकृष्ण के अनुयायियों ने सिद्ध कर दिखाया कि मूर्ति पूजा किए बिना भी सच्चे हिंदू बने रहा जा सकता है और जो मूर्तियां नहीं पूजते हैं उन्हें यह नहीं पता कि जब वे नामरूपरहित ब्रह्म का गुणगान करते हैं तो ऐसा करते समय वे भी परोक्ष रूप से वही करते हैं जो मूर्तिपूजक करते है। रामकृष्ण ने कहा, 'परमात्मा रूपरहित भी है और रूपसंपन्न भी। मूर्तियां और अन्य प्रतीक भी वैसे ही हैं जैसे आपके ईश्वर के गुण, और ये गुण, मूर्तियों से भिन्न नहीं हैं । मूर्तियां इन्हीं गुणों का केवल कठोर और ठोस रूप हैं।' स्वयं हिंदू सुधारकों के समक्ष भी हिंदू धर्म पूरी तरह सुरक्षित था।

रामकृष्ण सभी धर्मो में सार्वभौम सामजस्य की खोज में थे। यदि हिंदुओं के अलग अलग संप्रदायों का एक समान आधार बन सकता है तो विश्व से विभिन्न धर्मों को भी उन बहुत सी नदियों जैसा माना जा सकता है जो अंत में एक ही समुद्र में जा मिलती हैं। रामकृष्ण ने इस्लाम और ईसाई धर्म के अध्ययन से पाया कि इनकी आंतरिक भावना भी वही है जो हिंदू धर्म की है। सभी धर्मों का लक्ष्य वही ईश्वर तक पहुँचना है और इसके मार्गों में भिन्नता, भिन्न–भिन्न परिस्थितियों के कारण है । लेकिन रास्ते अलग–अलग होने से लक्ष्य अलग नहीं हो जाता बल्कि ये सभी उसी एक मंजिल तक पहुंचते हैं। सभी संप्रदायों और धर्मों की मूल बातें एक जैसी हैं। सत्य विश्वव्यापी है, ईश्वर एक है और सदाचार ही जीवन का सच्चा मूल्य है। इसलिए यदि मनुष्य सच्चे धर्म का आंतरिक अर्थ समझ जाए तो सभी धर्म अंत में सारे विश्व के मानव समाज को एकता के सूत्र में पिरो सकते हैं। 19वीं शताब्दी के भारत में रामकृष्ण के आध्यात्मिक विश्वबंधुत्व ने भारतीयों मानवता की आध्यात्मिक एकता की नई कल्पना का चित्र दिखाया।

समाज के सभी स्तरों और वर्गों के बहुत से लोग रामकृष्ण की ओर आकृष्ट हए। रामकृष्ण, मानव में देवत्व के प्रतीक और विनम्रता तथा सदाचार की मूर्ति बन गए। जो उनके अनुयायी बने उनमें सबसे प्रसिद्ध थे नरेंद्र नाथ दत्त, जिन्हें इतिहास स्वामी रामकृष्ण के नाम से भलीभांति जानता है। वे शिक्षित, प्रगतिशील, बौद्धिक प्रतिभा के धनी और आधुनिक दृष्टीकोण वाले व्यक्ति थे। इसलिए उनका रामकृष्ण की ओर आकृष्ट होना विरोधाभास ही प्रतीत होता है। लेकिन वे अपने गुरु के सबसे प्रिय शिष्य थे। 1886 ई० में रामकृष्ण परमहंस का निधन हो गया और उनका कार्यभार रामकृष्ण के कंधों पर पड़ा।

रामकृष्ण ने हिंदू आध्यात्मिक विचारों की व्याख्या, आधुनिक न्यायसंगत और प्रगतिशील विचारों की दृष्टि से की। साथ ही उन्होंने यह बताना चाहा कि आध्यात्मिक उपलब्धियां, मस्तिष्क और शरीर की स्वस्थता के अनुसार होता है। उन्होंने कई लोगों के मन में यह विश्वास पैदा करने में सफलता पाई कि हिंदू धर्म वास्तव में वह नहीं जो पश्चिम वाले इसके बाह्य रूपों में देखते हैं बल्कि यह इससे कहीं अधिक वास्तविक और जीवनदायक है तथा आंतरिक सत्यों व ठोस तर्कसंगत निष्कर्षों का भण्डार है।अन्य देशों को हिदू धर्म का सही परिचय देते हुए रामकृष्ण भारतवासियों के लिए, भौतिक दृष्टि से विकसित पश्चिम से, सांसारिक आशावाद लाए। भौतिक और तात्विक, आध्यात्मिक और सांसारिक–इन सभी के लिए मानव जीवन में संतुलन और सामंजस्य की आवश्यकता है। वे आध्यात्मिक और भौतिक क्षेत्रों की परंपरागत उपलब्धियों को लेकर, मानव समाज के कल्याण के लिए मूल्यों का आदान–प्रदान करना चाहिए। अध्यात्म को उसके दार्शनिक और अबोध्य शास्त्रों के एकांतवास से बाहर लाकर, सांसारिक कार्यों में रत जनसाधारण के मन–मस्तिष्क तक लाना। धर्म का संदेश मनुष्य के पुनरजागरण के लिए था। आध्यात्मिक तेज, साधारण जीवन के लिए भी आवश्यक था। मानव के विचारों और कार्यों के अत्यंत अंधकारमय पहलुओं में, धर्म की आध्यात्मिक व नैतिक किरणे अत्यंत आवश्यक समझी गई। रामकृष्ण का जीवनकाल

राष्ट्रवादी युग का उषा काल था । उनका आध्यात्मिक आशा संदेश भारतीय चेतना के लिए प्रगाढ़ शक्ति सिद्ध हुआ। उन्होंने व्यक्ति के उत्थान और सामूहिक रूप से प्रगति तथा समृद्धि की ओर प्रयाण पर विशेष बल दिया। रामकृष्ण व्यक्ति और राष्ट्र के मन से हीनभावना, भय, उदासीनता और जड़ता को निकाल फेंकना चाहते थे। गरीबी और गूलामी के उन दुर्दशापूर्ण दिनों में भारत के राष्ट्रीय जीवन में गंभीर कमियां थीं। लोगों को उच्च लक्ष्यों को प्राप्त करने की अपनी क्षमता पर संदेह था और वे अपने आप को असहाय समझते थे जिसके कारण वे कोई रचनात्मक योग नहीं दे पाते थे।

रामकृष्ण के विचार, राष्ट्रीय व्याधियों की निवारक औषधि थे।रामकृष्ण के उपदेशों में आधुनिक युक्तिवाद और प्राचीन रहस्यवाद, वेद तथा उपनिषदों के ज्ञान और आधुनिक विज्ञानजन्य ज्ञान, उच्चतम आध्यत्मिक मल्यों, सांसारिक वास्तविकताओं, धार्मिक विचारधाराओं और धर्मनिरपेक्ष मतों का विचित्र लेकिन अनूठा सम्मिश्रण देखने को मिलता है। वे प्राचीन बौद्धिकता, मध्यकालीन भक्ति और आधुनिक तर्कबुद्धि के प्रतिनिधि थे। धर्म, व्यक्तिगत मामला है, फिर भी इसका सार्वभौम स्वरूप है। 'धर्म', मनुष्य में उस देवत्व की अभिव्यक्ति है जो उसमें पहले ही विद्यमान है।' धर्म', उन्होंने कहा, 'न तो पुस्तकों में, न मानसिक सहमति में, और न ही तर्क–वितर्क में है। तर्क–वितर्क, सिद्धांत, लेख, पुस्तकें, धार्मिक रीतियां ये सब धर्म के सहायक हैं : धर्म स्वयं तो आत्मबोध से मिलता है।' धर्मग्रंथों और रहस्यों, प्रगाढ़ पांडित्य के अज्ञेय शिखरों, और असंभव धारणाओं में से जनसाधारण के लिए धर्म की सरल व्याख्या लाए। इस प्रकार का धर्म सभी पक्षपातपूर्ण भावनाओं से परे था, लेकिन यह सभी वर्गों के लोगों की प्राकृतिक वृत्ति के निकट था । ऐसे व्यक्तिगत आत्मबोध में घृणा या दूसरों के साथ अन्याय करने का कोई स्थान नहीं हो सकता। इससे उदारता और सहिष्णुता की भावना का संचार हुआ। 'हम किसी को भी अस्वीकार नहीं करते, चाहे वह आस्तिक, विश्वदेवतावादी, अद्वैतवादी, बहदेववादी, अज्ञात ईश्वरवादी या नास्तिक ही क्यों न हो। अनुयायी बनने की शर्त केवल यह है कि वह अपना चरित्र व्यापक और पूर्ण श्रद्धा वाला बनाए...हमारा विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति देवतुल्य है, भगवान है।'

रामकृष्ण को ईश्वर और ब्रह्मांड की सबसे तर्कसंगत और वैज्ञानिक व्याख्या किया। इस ब्रह्मांड की रचना, इससे बाहर के किसी ईश्वर ने , नहीं की है और न ही यह किसी बाहरी श्रेष्ठ बौद्धिक शक्ति का कार्य है। यह स्वसृजक, स्वनाशक, स्वअभिव्यक्त, एक अनादि अनंत अस्तित्व, ब्रह्म है।' वेदों के ऐसे आदर्शों के समक्ष मनुष्य प्रकृति की विशाल रचना का अंशमात्र है, जिसके अंदर स्वयं ब्रह्म विराजमान है । वे अत्यंत कड़े शब्दों में धार्मिक बाह्यरूपों की निंदा करते थे।

उत्साही प्रचारक रामकृष्ण ने रामकृष्ण के अनुयायियों को संगठित किया और 1897 ई० में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। इस मिशन को तीन कार्य सौंपे गए पहला–वेदांत के अध्यात्मवाद का संदेश दूर–दूर तक प्रसारित करना, दुसरा–विभिन्न धर्मों और संप्रदायों के बीच समन्वय और सदभाव स्थापित करना, और तीसरा–मानव सेवा को ईश्वर सेवा समझना।

संदर्भ स्त्रोत :

1. प्लासी से विभाजन तक – शेखर बंगोपाध्याय
2. सी॰ वाई॰ चिंतामणी – इंडियन सोशल रिफार्म
3. एस॰ शस्त्री – हिस्ट्री ऑफ ब्रह्म समाज
4. लजपत राय – आर्य समाज का इतिहास
5. आर॰ रोलैण्ड – दि लाइफ ऑफ रामकृष्ण
6. सी॰ एच॰ हेमसथ – इण्डियन नेशनलिज्म एण्ड हिन्दू सोशल रिफार्म
7. इनटरनेट